International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 4 March-April 2024

मराठा राजनीति में बाजीराव प्रथम का योगदान

प्रो. चम्पालाल पाटले[1] एवं डा. कमलेश कुमार शुक्ल[2]
[1]विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य, शासकीय नवीन कॉलेज, बलरामपुर रामानुजगंज (छ.ग.)
[2]विभागाध्यक्ष इतिहास, सी. एम.दुबे स्नातकोतर महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)
Corresponding Author: - प्रो. चम्पालाल पाटले
DOI- 10.5281/zenodo.12703557

सारांश:

भारतीय इतिहास में सुनहरे पन्ने लिखने वाले जिन महान चरित्रों की उपेक्षा हुई है, उनमें सबसे ऊपर पेशवा बाजीराव प्रथम का नाम आता है। पेशवा बाजीराव के योगदान के प्रति न्याय तभी होगा, जब हम मस्तानी की रूमानी कहानी से हटकर बाजीराव की ज़िंदगी के उन अध्यायों पर नज़र डालें, जो उनके पराक्रम और राजनिष्ठा की रोमांचक और प्रेरक गाथा समेटे हुए है।

पेशवा बाजीराव प्रथम मराठा साम्राज्य के छत्रपति शाहू जी महाराज के पेशवा रहे। 1720 ई. से 1740 ई. तक मराठों के कर्ताधर्ता तथा भाग्य विधाता बने रहे। इनको बाजीराव बल्लाल भट्ट तथा थोरले बाजीराव के नाम से भी जाना जाता है। उनके कुशल नेतृत्व एवं रण कौशल ने मराठा साम्राज्य का विस्तार उत्तर भारत में किया। बाजीराव प्रथम का जन्म 18 अगस्त 1700 ईस्वी में हुआ था, उनके पिता का बालाजी विश्वनाथ एवं माता राधाबाई बर्वे थी। बाजीराव प्रथम को सभी 09 महान पेशवाओं में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। 20 साल की उम्र में पेशवा बनकर मराठा सत्ता की पताका को भारत में फहराने वाले महान योद्धा बाजीराव ने क़रीब 40 युद्धों में विजय हासिल की और इस कारण उन्हें दुनिया के महानतम योद्धाओं और विजेताओं की श्रेणी में रखा जाता है। लगातार युद्धों से पेशवा बाजीराव प्रथम ने नर्मदा नदी के तट के किनारे रावरखेड़ी में 28 अप्रैल 1740 ई को अंतिम सांस ली।

मूल शब्द :– पेशवा, बाजीराव प्रथम, मराठा शासन।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणत्मक एवं वर्णनात्मक प्रस्तुति का है शोध कार्य के लिए मूल ग्रंथ एवं सहायक ग्रंथ का आधार लिया गया है।

प्रस्तावना :–

बाजीराव प्रथम का जन्म 18 अगस्त 1700 ईस्वी में दुबेरे सिन्नार, मराठा साम्राज्य (वर्तमान महाराष्ट्र भारत) में हुआ था, उनके पिता का नाम बालाजी विश्वनाथ एवं माता का नाम राधाबाई बर्वे था, उनके बचपन का नाम विसाजी भट्ट था। काशीबाई और मस्तानी इनकी दो पत्नियों थी, शमशेर बहादुर और रघुनाथ राव उनके बच्चे थे। चिमना जी अप्पा (भाई) तथा सदाशिव राव भतीजा था । बाजीराव के साहसिक जीवन को भारतीय सिनेमा में चित्रित किया गया है और उपन्यासों में भी चित्रित किया गया है .. (1,2,3) बाजीराव का अपनी दूसरी पत्नी मस्तानी के साथ रिश्ता एक विवादास्पद विषय है, इसके बारे में निश्चितता के साथ बहुत कम जानकारी है। (4,5) बाजीराव की पत्नी काशीबाई थी जो महादजी कृष्ण जोशी और चास की भवानी बाई एक धनी बैंकिंग परिवार की बेटी थी (6) बाजीराव ने हमेशा अपनी पत्नी काशीबाई के साथ प्यार और सम्मान से व्यवहार किया। (7) उनके चार बेटे थे बालाजी बाजीराव, रामचंद्र राव, रघुनाथ राव, और जनार्दन राव थे। जिसमे जनार्दन राव की कम उम्र में मृत्यु हो गई थी। बाजीराव की एक अन्य पत्नी मस्तानी थी जो राजपूत राजा छत्रसाल की बेटी थी जो उनके मुस्लिम उप पत्नी से पैदा हुई थी।(8) यह रिश्ता राजनीतिक था, छत्रसाल को खुश करने के लिए तय किया गया था। 1734 ईस्वी में मस्तानी का एक बेटा कृष्ण राव था। क्योंकि उनकी मां मुस्लिम थी इसलिए हिंदू पुजारिओं ने उपनयन समारोह का आयोजन करने से इनकार कर दिया और उन्हें शमशेर बहादुर के नाम से जाना जाने लगा। (9) 1740 ईस्वी में बाजीराव और मस्तानी की मृत्यु के बाद काशीबाई ने 6 वर्षीय शमशेर बहादुर को अपने बच्चों की तरह पाला। शमशेर को अपने पिता से बांदा और कालपी के प्रभुत्व का एक हिस्सा मिला। पानीपत की तीसरी लड़ाई में शमशेर बहादुर पेशवा की ओर से लड़े, युद्ध में घायल होने के कारण कई दिनों बाद डीग में उनकी मृत्यु हो गई। (10,11)

बाजीराव ने 1728 ईस्वी में अपने संचालन का आधार सासवड से पुणे स्थानांतरित कर दिया और कस्बे को एक बड़े शहर में बदलने की नीव रखी। उन्होंने 1730 ईस्वी में शनिवार वाड़ा का निर्माण शुरू किया ।

17 अप्रैल 1720 ई को उनके पिता की मृत्यु के पश्चात छत्रपति शाहू ने बाजीराव को अपना पेशवा नियुक्त किया। उनके नियुक्ति के समय तक मुगल सम्राट मोहम्मद शाह ने एक संधि के तहत मराठों को ढक्कन के छः प्रांतो में कर चौथ एकत्र करने का अधिकार दिया। (12) बाजीराव ने साहू को आश्वत किया कि मराठा साम्राज्य को अपनी रक्षा के लिए अपने दुश्मनों के खिलाफ आक्रामक होना होगा (13) बाजीराव ने मुगल साम्राज्य के संबंध में कहा था कि ष्आओ हम सूखते हुए पेड़ के तने पर प्रहार करें और शाखाएं अपने आप गिर जाएगी। मेरी सलाह सुनो और मैं अटक की दीवारों पर मराठा झंडा फहराऊंगा।(14)

पेशवा के रूप में बाजीराव की चुनौतियां :–

पेशवा के रूप में बाजीराव को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। बाजीराव ने अपने जैसे मल्हार राव होल्कर राणो जी शिंदे , पावर बंधु फतेह सिंह भोसले जैसे युवाओं को कमांडर के रूप में पदोन्नत किया, यह लोग

उन परिवारों से नहीं थे जो दक्कन सल्तनत में वंशानुगत देशमुख थे। (15)

1. ढक्कन के मुगल वायसराय आसफजहां प्रथम , हैदराबाद के निजाम ने इस क्षेत्र में एक वास्तविक स्वायत्त राज्य बनाया था उन्होंने साहू के कर एकत्र करने के अधिकार को चुनौती दी।(16)
2. मराठों को मालवा और गुजरात में नए अधिग्रहित क्षेत्रो के कुलीनों पर नियंत्रण करने की जरूरत थी।
3. कई नाम मात्र मराठा क्षेत्र वास्तव में पेशवा के नियंत्रण में नहीं थे उदाहरण के लिए सिद्धियों ने जंजीरा किले पर नियंत्रण कर लिया था (17) इन सभी से उन्हें निपटना था।
4. गोवा के पुर्तगालियों की जल सेना मराठा राज्य सत्ता के रास्ते में व्यवधान थे।
5. मराठा सामंत कान्हो जी आंग्रे और कोल्हापुर में स्थित संभाजी छत्रपति साहू के प्रतिद्वंदी थे।
6. मराठा संघ के सामंतों की शक्ति को नियंत्रित एवं महत्वहीन करना जरूरी था।
7. वे मराठा संघ में पेशवा की शक्ति को सर्वोपरी बनाना चाहते थे।

बाजीराव के युद्ध–

निजाम मुलमुल्क यानी निजाम, दक्कन में पेशवा बाजीराव के लिए सबसे बड़ा बाधक था निजाम का बाजीराव ने एकाधिक बार पराभाव किया, जो मुगल साम्राज्य का कभी वजीर रहा, कभी सेनानायक और कभी सूबेदार छत्रपति साहू के समय मराठों ने मुगल बादशाह से ढक्कन के सूबों की चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल करने का जो एकाधिकार हासिल कर लिया था उसे निजाम ने चुनौती देते हुए चौथ और सरदेशमुखी देने से मना कर दिया। अतः बाजीराव ने 1728 ईस्वी में पालखेड के युद्ध में निजाम को पराजित किया पराजित होने के बाद निजाम ने मराठों को चौथ एवं सरदेशमुखी का अधिकार दिया तथा मराठों के छीने हुए प्रदेशों को वापस करने का वादा किया।

इसके 2 साल बाद बाजीराव ने गुजरात को हस्तगत करके अपने अधिकारी गायकवाड को वहां नियुक्त कर दिया इस प्रकार दक्कन एवं पश्चिम में बाजीराव का मराठा ध्वज फहराने लगा बाजीराव ने वार्ना की संधि से कोल्हापुर के संभाजी द्वितीय की शक्ति को सीमित कर दिया कोंकण तट पर आंग्रे सिद्धियों और पुर्तगालियों के प्रभुत्व को खत्म करने का काम किया।

बुंदेलखंड अभियान–

बुंदेलखंड में राजा छत्रसाल ने 1728 ईस्वी में बुंदेलखंड में अपनी स्वतंत्र राज्य स्थापित किया।मुगल सेना के नेतृत्व में मुहम्मद खा बंगस ने छत्रसाल के विरुद्ध अभियान किया । इस समय राजा छत्रसाल ने मुगल सेना के विरुद्ध बाजीराव से सहायता के लिए अनुरोध किया। मार्च 1729 ईस्वी में बाजीराव प्रथम ने मोहम्मद खा बंगश को युद्ध में हराकर छत्रसाल को उसके सिंहासन पर बैठा दिया। छत्रसाल ने अपनी बेटी मस्तानी का विवाह बाजीराव प्रथम से कर दिया और एक बड़ी जागीर बाजीराव को दी।

गुजरात अभियान 1730–31 :–

गुजरात विजय हेतु बाजीराव ने अपने भाई चिमना जी अप्पा को भेजो गुजरात में त्र्यंबक राव दाभाडे ने बाजीराव का विरोध किया। त्र्यंबक राव दाभाड़े ने बाजीराव के विरुद्ध मुगल कमांडर मोहम्मद का बंगश और हैदराबाद निजाम के साथ मिल गया। उसकी संयुक्त सेना को बाजीराव प्रथम ने पराजित कर दिया। 13 अप्रैल 1731 ईस्वी को वार्ना की संधि के द्वारा गुजरात में बाजीराव ने साहू का वर्चस्व स्थापित किया।

दिल्ली अभियान 1736–37 ई. :–

दिल्ली पर आक्रमण पेशवा बाजीराव प्रथम का सबसे बड़ा साहसिक कदम था। बाजीराव प्रथम ने 29 मार्च 1737 को दिल्ली पर आक्रमण किया था। मात्र 3 दिन के दिल्ली प्रवास के दौरान मुगल सम्राट मोहम्मद शाह उसके भय से दिल्ली छोड़ने को तैयार हो गया था। बाजीराव को दिल्ली अभियान सफल रहा था उसने उत्तर भारत में अपनी शक्ति के सर्वोच्चता को सिद्ध किया।

भोपाल की लड़ाई दिसंबर 1737 ई. :–

बाजीराव के दिल्ली अभियान के पश्चात मुगल सम्राट ने हैदराबाद के निजाम (गवर्नर) निजाम उल मुल्क आसफ जाह से बाजीराव की शक्ति को रोकने को कहा। अतः भोपाल में 24 दिसंबर 1737 को पेशवा ने निजाम की मुगल सेना को पराजित कर दिया। अंत में निजाम को पेशवा से दोराहा की संधि के लिए 7 जनवरी 1738 को विवश होकर हस्ताक्षर करने पड़े।

बाजीराव प्रथम का निर्माण कार्य :–

वाराणसी में पेशवा बाजीराव प्रथम का एक घाट है जिसे उन्होंने 1735 ईस्वी में बनाया था, दिल्ली के बिडला में उनकी एक मूर्ति है, कच्छ में बनाया उनका आइना महल, पुना में मस्तानी महल, और शनिवार बाड़ा है । पुना शहर को कस्बे से महानगर बनाने में बाजीराव प्रथम का महान योगदान था।

बाजीराव प्रथम की मृत्यु–

गृह कलेश और लगातार युद्धों से पेशवा बाजीराव प्रथम कमजोर हो गए थे। अंततः नर्मदा नदी के तट के किनारे रावरखेड़ी में 28 अप्रैल 1740 ई को अंतिम सांस ली। उनका अंतिम संस्कार नर्मदा नदी के तट पर किया गया इस तरह पेशवा बाजीराव अपनी वीरता से दक्षिण और उत्तरी भारत में मराठों का राजनीतिक वर्चस्व स्थापित किया। पेशवा बाजीराव प्रथम की समाधि ग्वालियर में उनके वफादार लेफ्टिनेंट सिंधिया द्वारा नर्मदा नदी के तट पर रावरखेड़ी खरगोन (मध्य प्रदेश) में बनाया गया।

Reference :-

1. "Peshwa Bajirao Review: Anuja Sathe shines as Radhabai in the period drama", India Today, 25 January 2017
2. Jha, Subhash K (19 October 2015). "Bajirao Mastani review: This gloriously epic Priyanka, Deepika and Ranveer-starrer is the best film of 2015". Firstpost. Retrieved 19 October 2015.
3. Palsokar, R. D. (1996). Bajirao I An Outstanding Cavalry General. Merven Technologies. ISBN 9788193989586.
4. Mehta, Jaswant Lal (2005). Advanced Study in the History of Modern India: 1707–1813. New Delhi: New Dawn Press. pp. 97, 215. ISBN 978-1932705546. 'The reputation of the young Peshwa as a brilliant military general soared very high...','They objected to the marriage of Baji Rao with Mastani..."
5. Sharma, Shripad Rama (1951). The Making of Modern India: From A. D. 1526 to the Present Day. Orient Longmans. p. 239.

6. Gokhale, Sandhya (2008). The Chitpavans: social ascendancy of a creative minority in Maharashtra, 1818–1918. Sandhya Gokhale. p. 82. ISBN 978-8182901322.
7. Mishra, Garima (3 January 2016). "Tracing Kashibai: The 'first' lady from Bhansali's Bajirao Mastani". The Indian Express. Retrieved 30 July 2017.
8. Jaswant Lal Mehta (2005). Advanced Study in the History of Modern India 1707–1813. Sterling Publishers Pvt. Ltd. p. 108. ISBN 978-1932705546. Of his own sweet will The Rajput king bestowed a large number of Personal Jagir to Bajirao near Jhansi and further offered his daughter Mastani born from his Muslim Concubine
9. Srinivasachari, Chidambaram S. (1951). The Inwardness of British Annexations in India. University of Madras. p. 219.
10. Crill, Rosemary; Jariwala, Kapil (2010). The Indian Portrait, 1560–1860. Mapin Publishing Pvt Ltd. p. 162. ISBN 978-8189995379.
11. Mehta, Jaswant Lal (2005). Advanced Study in the History of Modern India: 1707–1813. New Delhi: New Dawn Press. pp. 492–494. ISBN 978-1932705546.
12. Chhabra, G. S. (2005) [1971]. Advanced Study in the History of Modern India (Volume 1: 1707–1813) (Revised ed.). Lotus Press. p. 20. ISBN 978-8189093068.
13. Sen, S. N. (2006). History Modern India. New Age International. p. 11. ISBN 978-8122417746.
14. Gordon, Stewart (2007). The Marathas 1600–1818. Cambridge [u.a.]: Cambridge University Press. pp. 117–121. ISBN 978-0521033169.
15. Gordon, Stewart (2007). The Marathas 1600–1818. Cambridge [u.a.]: Cambridge University Press. pp. 120–131. ISBN 978-0521033169.
16. Dunbar, Sir George (1951). India and the Passing of Empire. Nicholson & Watson.
17. Bhatt, Rajendra Shankar (2005). Sawai Jai Singh. National Book Trust, India. pp. 70–75. ISBN 978-81-237-4418-6.